International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

बहुसांस्कृतिक कक्षा में संवेदनशील शिक्षणशास्त्र के उपयोग का अध्ययन

डॉ.सीमा बर्गट

सहायक प्रोफेसर,शिक्षा विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय ,वर्धा

सारांश

शिक्षण शास्त्र का अर्थ है की शिक्षक विद्यार्थियों को किस तरह से पढ़ाते हैं ।विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार उन्हें समझाने के लिए कौन कौन से शिक्षण विधि का प्रयोग करते हैं जिसके द्वारा विद्यार्थी अध्ययन करने में या अपनी पाठ्य वस्तु समझने में सहज हो विधिवत अध्ययन को ही शिक्षणशास्त्र कहा जाता है। ।यही महत्वपूर्ण बिंदु शिक्षक प्रशिक्षण में सम्मेलित होना आवश्यक है । इसका प्रमाण देखे तो महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग के बी.एड. तथा एम्.एड .पाठ्यक्रम के द्वितीय सेमेस्टर में प्रायोगिक क्रियाओं के अंतर्गत संस्कृति संवेदनशील शिक्षण शास्त्र का समावेश किया गया है संवेदनशील शिक्षणशास्त्र एक ऐसी शिक्षण पद्धति है जो विद्यार्थियों की व्यक्तिगत, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा भावनात्मक आवश्यकताओं को समझते हुए समावेशी एवं न्यायसंगत शिक्षण वातावरण का निर्माण करती है। यह शिक्षण दृष्टिकोण विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, सहभागिता, समान अवसर तथा सीखने की गुणवत्ता को बढ़ावा देता है। बहुसांस्कृतिक कक्षा में संवेदनशील शिक्षणशास्त्र का उपयोग विद्यार्थियों के बीच परस्पर सम्मान, सहयोग, सहिष्णुता तथा सामाजिक समरसता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में आठ –नौ राज्य के विद्यार्थी अध्ययनरत है| प्रस्तुत शोध में स्व निर्मित 5 पॉइंट स्केल प्रश्नावली तथा खुले प्रश्न एवं साक्षत्कार का उपयोग किया गया । प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक एवं सर्वेक्षणात्मक प्रकृति का है। मिश्रित उपागम अंतर्गत मात्रात्मक आँकड़ों का संकलन प्रश्नावली के माध्यम से तथा गुणात्मक जानकारी का संकलन साक्षात्कार एवं कक्षा-अवलोकन के माध्यम से किया गया। दोनों प्रकार के आँकड़ों के समन्वित विश्लेषण द्वारा बहुसांस्कृतिक कक्षा में संवेदनशील शिक्षणशास्त्र की स्थिति, प्रभावशीलता, चुनौतियों एवं संभावनाओं को समझने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द - बहुसांस्कृतिक कक्षा , संवेदनशील शिक्षणशास्त्र, समावेशी शिक्षा

प्रस्तावना

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा का स्वरूप निरंतर परिवर्तनशील होता जा रहा है। विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों, धर्मों, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों तथा जीवन-मूल्यों से आने वाले विद्यार्थियों की उपस्थिति ने विद्यालयों को बहुसांस्कृतिक वातावरण प्रदान किया है। ऐसी कक्षाओं में प्रत्येक विद्यार्थी की पहचान, अनुभव और सांस्कृतिक विविधता का सम्मान करना प्रभावी शिक्षण की अनिवार्य आवश्यकता बन गया है।

भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में विद्यालयों की कक्षाएँ विविध सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। ऐसी स्थिति में यदि शिक्षक विद्यार्थियों की विविधताओं को समझते हुए शिक्षण की रणनीतियों का चयन करते हैं, तो शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया अधिक प्रभावी, सहभागी और समावेशी बन सकती है। इसके विपरीत, यदि सांस्कृतिक विविधताओं की उपेक्षा की जाती है, तो विद्यार्थियों में असमानता, उपेक्षा और सीखने में कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं।

इसी संदर्भ में "बहुसांस्कृतिक कक्षा में संवेदनशील शिक्षणशास्त्र के उपयोग का अध्ययन" विषय अत्यंत प्रासंगिक है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह जानना है कि बहुसांस्कृतिक कक्षाओं में शिक्षक किस प्रकार संवेदनशील शिक्षणशास्त्र का प्रयोग करते हैं तथा इसका विद्यार्थियों के अधिगम, सहभागिता तथा सामाजिक समावेशन पर क्या प्रभाव पड़ता है, तथा इसके प्रभावी क्रियान्वयन में कौन-कौन सी चुनौतियाँ और संभावनाएँ विद्यमान हैं। यह अध्ययन शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों तथा शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा तथा समावेशी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सुदृढ़ बनाने में सहायक होगा।

शोध का महत्व

प्रस्तुत अध्ययन बहुसांस्कृतिक कक्षाओं में समावेशी एवं समान अवसर आधारित शिक्षण को समझने और सुदृढ़ करने में सहायक होगा। प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष शिक्षकों को विद्यार्थियों की सांस्कृतिक, भाषाई, सामाजिक एवं आर्थिक विविधताओं को समझते हुए अधिक प्रभावी शिक्षण रणनीतियाँ अपनाने में सहायता करेंगे। संवेदनशील शिक्षणशास्त्र के उपयोग से विद्यार्थियों की सहभागिता, आत्मविश्वास, सीखने की प्रेरणा तथा शैक्षणिक उपलब्धि में सुधार की संभावनाओं का भी आकलन किया जा सकेगा।

यह अध्ययन ऐसा कक्षा वातावरण विकसित करने में उपयोगी होगा, जहाँ सभी भिन्न भिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थी सम्मान, सुरक्षा और समानता का अनुभव करें। विश्वविद्यालय का कामकाजी माध्यम हिंदी होनेके कारण प्रस्तुत शोध यह समझने में सहायता करता है कि संवेदनशील शिक्षणशास्त्र किस प्रकार सांस्कृतिक, भाषाई या सामाजिक आधार पर होने वाले भेदभाव और पूर्वाग्रह को कम करने में योगदान दे।

शोध का औचित्य

भारत में अधिकतम ग्रामीण क्षेत्र बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक है। विद्यालयों की कक्षाओं में विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषाई और आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थी एक साथ अध्ययन करते हैं। ऐसी परिस्थितियों में केवल विषयवस्तु का शिक्षण पर्याप्त नहीं होता, बल्कि शिक्षण प्रक्रिया का संवेदनशील, समावेशी और विद्यार्थी-केंद्रित होना भी आवश्यक है। यदि शिक्षक विद्यार्थियों की विविध पृष्ठभूमि, अनुभवों और आवश्यकताओं को समझते हुए शिक्षण करते हैं, तो सीखने का वातावरण अधिक सकारात्मक, न्यायसंगत और प्रभावी बनता है।

वर्तमान समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी समावेशी, समानतामूलक और बहुभाषिक शिक्षा पर विशेष बल देती है। इसके अलावा अनेक विद्यालयों में सांस्कृतिक विविधता के प्रति संवेदनशील शिक्षणशास्त्र के वास्तविक उपयोग, उसकी प्रभावशीलता तथा उसके समक्ष आने वाली चुनौतियों पर पर्याप्त अध्ययन उपलब्ध नहीं हैं। इस कारण यह जानना आवश्यक है कि शिक्षक बहुसांस्कृतिक कक्षाओं में संवेदनशील शिक्षणशास्त्र का किस प्रकार उपयोग कर रहे हैं और उसका विद्यार्थियों की सहभागिता, अधिगम, आत्मविश्वास तथा कक्षा के वातावरण पर क्या प्रभाव पड़ रहा है।

प्रस्तुत शोध शिक्षकों की वर्तमान शिक्षण-पद्धति, विद्यार्थियों के अनुभवों तथा कक्षा के वास्तविक वातावरण का अध्ययन करके उन पहलुओं की पहचान की है , जिनमें सुधार की आवश्यकता है। साथ ही, यह अध्ययन शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों, तथा विद्यालय प्रबंधन के लिए भी उपयोगी है , जिससे बहुसांस्कृतिक कक्षाओं में अधिक समावेशी, संवेदनशील और प्रभावी शिक्षण व्यवस्था विकसित की जा सके।

अतः "बहुसांस्कृतिक कक्षा में संवेदनशील शिक्षणशास्त्र के उपयोग का अध्ययन" वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में अत्यंत प्रासंगिक, उपयोगी और औचित्यपूर्ण है, क्योंकि यह नई नीति के अनुसार विविधता का सम्मान करने वाली, समान अवसर प्रदान करने वाली तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।।

शोध अन्तराल -

उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बहुसांस्कृतिक शिक्षा समावेशी शिक्षा तथा सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण पर अनेक शोध किए गए हैं, अधिकांश अध्ययन संवेदनशील शिक्षणशास्त्र की अवधारणा और सैद्धांतिक पक्षों पर केंद्रित हैं, जबकि वास्तविक कक्षा में शिक्षक इसका किस प्रकार उपयोग करते हैं, इस पर सीमित शोध उपलब्ध है।

विभिन्न सांस्कृतिक, भाषाई और सामाजिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों वाली कक्षाओं में संवेदनशील शिक्षणशास्त्र के प्रभाव का अध्ययन अपेक्षाकृत कम किया गया है। उपलब्ध शोधों में विद्यार्थियों के परिणामों पर अधिक ध्यान दिया गया है, जबकि शिक्षकों की संवेदनशीलता, शिक्षण दृष्टिकोण और कक्षा व्यवहार का विस्तृत अध्ययन कम हुआ है।

कई अध्ययन केवल प्रश्नावली आधारित मात्रात्मक विधि पर आधारित हैं। साक्षात्कार और कक्षा अवलोकन के माध्यम से बहु वास्तविक कक्षा अनुभवों का अध्ययन कम किया गया है। बहू सांस्कृतिक कक्षा में विद्यार्थी अपनी सांस्कृतिक पहचान, सम्मान, सहभागिता और सीखने के अनुभवों को किस प्रकार देखते हैं, इस पर अधिक शोध की आवश्यकता है। संवेदनशील शिक्षणशास्त्र के प्रयोग पर सीमित अनुभवात्मक अध्ययन उपलब्ध हैं।

भारतीय विद्यालयों में भाषाई, सांस्कृतिक और सामाजिक विविधता अधिक होने के बावजूद बहुसांस्कृतिक कक्षाओं में शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सांस्कृतिक संवेदनशीलता के विकास और उसके वास्तविक कक्षा प्रयोग के बीच संबंधों का पर्याप्त अध्ययन नहीं किया गया है। अतः बहुसांस्कृतिक कक्षाओं में संवेदनशील शिक्षणशास्त्र का वास्तविक उपयोग किस प्रकार किया गया , शिक्षक एवं विद्यार्थी इसे कैसे अनुभव करते हैं, तथा इसका अधिगम एवं कक्षा वातावरण पर क्या प्रभाव पड़ा। यह अध्ययन प्रश्नावली, साक्षात्कार और कक्षा अवलोकन जैसे मिश्रित शोध उपकरणों के माध्यम से किया है।

शोध की प्रकृति, विधि एवं उपागम

प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक एवं सर्वेक्षणात्मक प्रकृति का है। इसमें बहुसांस्कृतिक कक्षा में संवेदनशील शिक्षणशास्त्र के उपयोग, प्रभाव एवं व्यवहारिक पक्षों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन की आवश्यकता के अनुसार मिश्रित पद्धति का प्रयोग करते हुए मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार के आँकड़ों को सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। इस विधि के माध्यम से विद्यार्थीयों से संरचित प्रश्नावली द्वारा जानकारी प्राप्त कर संवेदनशील एवं समावेशी शिक्षणशास्त्र के विभिन्न आयामों का अध्ययन किया गया। इस शोध में मिश्रित उपागम अपनाया गया है। इसके अंतर्गत मात्रात्मक आँकड़ों का संकलन प्रश्नावली के माध्यम से तथा गुणात्मक जानकारी का संकलन साक्षात्कार एवं कक्षा-अवलोकन के माध्यम से किया गया। दोनों प्रकार के आँकड़ों के समन्वित विश्लेषण द्वारा बहुसांस्कृतिक कक्षा में संवेदनशील शिक्षणशास्त्र की स्थिति, प्रभावशीलता, चुनौतियों एवं संभावनाओं को समझने का प्रयास किया गया है।

राज्यवार शोध-विश्लेषण

शिक्षा विभाग के बी. एड एम् एड एकीकृत एवं बी एड. के चयनित कुल छह राज्य के विद्यार्थियों की कुल 23 प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुई। उपलब्ध प्रतिक्रियाओं में बिहार, दिल्ली, मध्य प्रदेश, ओडिशा, उत्तर प्रदेश तथा झारखंड राज्यों का प्रतिनिधित्व है। इससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन में विभिन्न भौगोलिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से प्रतिभागियों की सहभागिता रही है।

प्राप्त प्रतिक्रियाएँ यह दर्शाता है कि अध्ययन का क्षेत्र केवल एक राज्य के विद्यार्थियों तक सीमित न होकर उत्तर, मध्य और पूर्वी भारत के विभिन्न क्षेत्रों तक विस्तृत है। यह भौगोलिक विविधता बहुसांस्कृतिक कक्षा एवं संवेदनशील शिक्षणशास्त्र के अध्ययन के लिए विशेष रूप से उपयोगी है, क्योंकि अलग-अलग राज्यों से आने वाले प्रतिभागियों के अनुभवों में भाषा, संस्कृति, सामाजिक पृष्ठभूमि और शैक्षिक परिस्थितियों की विविधता परिलक्षित हो सकती है।

समेकित विश्लेषण

प्रस्तुत आँकड़ों में कुल 23 प्रतिक्रियाएँ सम्मेलित हैं। मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार की प्रतिक्रियाओं का समेकित विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि संवेदनशील एवं समावेशी शिक्षणशास्त्र के प्रति प्रतिभागियों का दृष्टिकोण सकारात्मक और व्यावहारिक है। शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप सहायता तथा कक्षा में विभिन्न संस्कृतियों से संबंधित गतिविधियों का आयोजन, दोनों ही आयामों में उच्च स्तर की सकारात्मकता दिखाई देती है।

1. शिक्षक विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार सहायता प्रदान करते हैं इस कथन का औसत स्कोर 4.35/5 है। 23 विद्यार्थियों से पता चलता है कि 78.2% विद्यार्थियों ने शिक्षक द्वारा व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप सहायता को 4 या 5 के स्तर पर स्वीकार किया। यह परिणाम संकेत करता है कि कक्षा में विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं, सीखने की गति और आवश्यकताओं को पहचानने तथा उनके अनुसार सहायता देने की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत मजबूत है।जब की 17.4% प्रतिभागियों द्वारा 3 की रेटिंग तथा 4.3% द्वारा 1 की रेटिंग यह संकेत देती है कि व्यक्तिगत सहायता की व्यवस्था को और अधिक संगठित, निरंतर और विद्यार्थी-केंद्रित बनाने की आवश्यकता है। विशेष रूप से बड़ी कक्षाओं, विभिन्न सीखने की गति तथा विविध क्षमताओं वाले विद्यार्थियों के संदर्भ में यह महत्वपूर्ण है।

2. कक्षा में विविध संस्कृतियों से संबंधित गतिविधियाँ आयोजित की जाती है इस कथन का औसत स्कोर 4.22/5 रहा। अर्थात 69.5% प्रतिभागियों ने इस पक्ष को 4 या 5 के स्तर पर सकारात्मक रूप से स्वीकार किया। इससे स्पष्ट होता है कि कक्षा में सांस्कृतिक विविधता को समझने और विद्यार्थियों को विभिन्न संस्कृतियों से परिचित कराने के लिए गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। फिर भी लगभग एक-चौथाई प्रतिभागियों की 3 की रेटिंग यह बताती है कि ऐसी गतिविधियों की नियमितता, विविधता और प्रभावशीलता को और बढ़ाने की गुंजाइश है।

3. विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों के बीच सहयोग इस कथन काऔसत स्कोर 4.61/5 कुल 95.6% प्रतिभागियों ने इस आयाम को 4 या 5 की रेटिंग दी। इससे स्पष्ट है कि बहुसांस्कृतिक कक्षा में विभिन्न पृष्ठभूमियों के विद्यार्थियों के बीच सहयोग, संवाद और सहभागिता को पर्याप्त रूप से प्रोत्साहित किया जा रहा है।

प्राप्त 23 प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करने तथा कक्षा अवलोकन एवं साक्षात्कार करने पर बहुसांस्कृतिक कक्षा में संवेदनशील शिक्षणशास्त्र के प्रति प्रतिभागियों की समझ स्पष्ट रूप से समावेशी, सम्मानपूर्ण और विविधता-स्वीकार दृष्टिकोण को दर्शाती है। इसे तीन प्रमुख आयामों में विश्लेषित किया गया था —

1. संवेदनशील शिक्षणशास्त्र के प्रमुख लाभ

- प्रतिक्रियाओं में सबसे प्रमुख लाभ के रूप में समान सम्मान, समान अवसर और समावेशन उभरकर सामने आया। विद्यार्थियों का मानना है कि संवेदनशील शिक्षणशास्त्र उनकी भाषा, संस्कृति, धर्म, जाति, लिंग तथा सामाजिक पृष्ठभूमि का सम्मान करते हुए उन्हें सीखने के समान अवसर प्रदान करता है।
- दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष अपनेपन, सुरक्षा और आत्मसम्मान की भावना का विकास है। विद्यार्थियों को जब अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति सम्मान मिलता है, तो उनमें आत्मविश्वास, सीखने की रुचि और कक्षा में सहभागिता बढ़ती है। साथ ही, पूर्वाग्रह, भेदभाव और सांस्कृतिक दूरी को कम करने में भी यह शिक्षणशास्त्र प्रभावी माना गया है।
- तीसरे स्तर पर, प्रतिक्रियाएँ दर्शाती हैं कि बहुसांस्कृतिक कक्षा विद्यार्थियों को विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों, परंपराओं, रीति-रिवाजों और जीवन-शैलियों को समझने का अवसर देती है। इससे सहयोग, एकता, आपसी समझ, मानवीय गुणों और सांस्कृतिक सम्मान का विकास होता है। अतः संवेदनशील शिक्षणशास्त्र केवल शैक्षणिक उपलब्धि तक सीमित न रहकर विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास में भी योगदान देता है।

2. संवेदनशील शिक्षणशास्त्र के प्रभावी उपयोग की चुनौतियाँ

- प्राप्त प्रतिक्रियाओं में सबसे प्रमुख चुनौती भाषाई विविधता और भाषा संबंधी अवरोध के रूप में सामने आई। विभिन्न भाषाओं और बोलियों वाले विशेष कर अहिन्दी भाषिक विद्यार्थियों को एक साथ पढ़ाने में शिक्षक को संप्रेषण तथा समझ से संबंधित कठिनाइयों का सामना करना पडता है।

- इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक विविधता, विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विभिन्नताएँ और सीखने की अलग-अलग गति भी महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं। बड़ी कक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी की आवश्यकता के अनुसार व्यक्तिगत ध्यान देना कठिन होता है। कुछ प्रतिक्रियाओं में शिक्षक प्रशिक्षण की कमी, सीमित संसाधन, ICT की अपर्याप्तता तथा उपयुक्त शिक्षण सामग्री का अभाव भी सामने आया।
- एक अन्य महत्वपूर्ण चुनौती पूर्वाग्रह और रूढ़िबद्ध सोच है। शिक्षक या विद्यार्थी अनजाने में किसी विशेष भाषा, संस्कृति अथवा सामाजिक पृष्ठभूमि को अधिक महत्त्व दे सकते हैं। इसके कारण कक्षा में भेदभाव या असहजता उत्पन्न हो सकती है। कुछ प्रतिभागियों ने यह भी संकेत किया कि संवेदनशील शिक्षणशास्त्र की सफलता काफी हद तक शिक्षक की मानसिकता, संवेदनशीलता और व्यवहार पर निर्भर करती है।

3. संवेदनशील एवं समावेशी कक्षा के निर्माण के सुझाव

- विद्यार्थियों के सुझावों में सबसे अधिक जोर समान व्यवहार और समान अवसर पर दिया गया है। शिक्षक को प्रत्येक विद्यार्थी की गरिमा, भाषा, संस्कृति, क्षमता और व्यक्तिगत आवश्यकता का सम्मान करना चाहिए तथा किसी भी प्रकार के भेदभाव से मुक्त वातावरण बनाना चाहिए।
- कक्षा में छात्र-केंद्रित, सहभागी और सहयोगात्मक शिक्षण को बढ़ावा देने की आवश्यकता भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। समूह गतिविधियों, सहकारी अधिगम और विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों के बीच संवाद, सहभागिता और आपसी संबंध विकसित किए जा सकते हैं।
- इसके साथ ही पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-सामग्री में विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से जुड़े उदाहरणों को सम्मेलित करना उपयोगी होगा। ICT तथा अन्य शिक्षण संसाधनों का प्रभावी उपयोग भी बहुसांस्कृतिक कक्षा को अधिक प्रभावी बना सकता है। कमजोर अथवा विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों पर अतिरिक्त ध्यान देने तथा उनकी व्यक्तिगत विभिन्नताओं को समस्या के बजाय संसाधन के रूप में देखने का सुझाव भी महत्वपूर्ण है।

समग्र निष्कर्ष

- समग्र रूप से, दोनों मात्रात्मक संकेतकों का उच्च औसत 4.35 व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार सहायता और 4.22 विविध सांस्कृतिक गतिविधियाँ यह दर्शाता है कि प्रतिभागियों के अनुभव में संवेदनशील शिक्षणशास्त्र का व्यावहारिक क्रियान्वयन सकारात्मक स्तर पर है। विशेष रूप से विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार सहायता प्रदान करने का पक्ष अपेक्षाकृत अधिक मजबूत दिखाई देता है।
- समग्र रूप से 23 प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण यह दर्शाता है कि विद्यार्थि संवेदनशील शिक्षणशास्त्र को बहुसांस्कृतिक कक्षा के लिए अत्यंत उपयोगी और आवश्यक मानते हैं। इसके अलावा भाषा संबंधी बाधाएँ, सांस्कृतिक विविधता, शिक्षक प्रशिक्षण की कमी, सीमित संसाधन, बड़ी कक्षाएँ और पूर्वाग्रह जैसी चुनौतियाँ इसके प्रभावी क्रियान्वयन में बाधक हैं।
- अतः एक प्रभावी बहुसांस्कृतिक कक्षा के लिए संवेदनशील एवं प्रशिक्षित शिक्षक, समावेशी पाठ्यक्रम, विविधतापूर्ण शिक्षण-सामग्री, सहयोगात्मक गतिविधियाँ, ICT का उपयोग तथा भेदभाव-मुक्त कक्षा वातावरण आवश्यक है। इस प्रकार संवेदनशील शिक्षणशास्त्र विद्यार्थियों की विविधताओं को स्वीकार करते हुए उन्हें समान अवसर प्रदान कर समावेशी शिक्षा एवं समग्र विकास की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

खुले प्रश्नों एवं अवलोकन से प्राप्त प्रमुख निष्कर्ष

- खुले प्रश्नों की प्रतिक्रियाओं से मात्रात्मक परिणामों से यह निष्कर्ष निकलता है की विद्यार्थी संवेदनशील शिक्षणशास्त्र को केवल शैक्षणिक उपलब्धि का माध्यम नहीं मानते, अपितु इसे सामाजिक-सांस्कृतिक एवं भावनात्मक विकास से भी जोड़ते हैं।

- गुणात्मक प्रतिक्रियाओं में सबसे प्रमुख चुनौती भाषाई विविधता और भाषा संबंधी बाधा के रूप में सामने आई है। इसके साथ ही यह निष्कर्ष निकलता है की , चुनौती केवल शिक्षक से संबंधित नहीं है, बल्कि शिक्षक, विद्यार्थी, पाठ्यक्रम, संसाधन और कक्षा-परिस्थिति इन सभी स्तरों पर दिखाई देती है।
- अतःअध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बहुसांस्कृतिक कक्षा में संवेदनशील शिक्षणशास्त्र समावेशी शिक्षा को सुदृढ़ करने का प्रभावी माध्यम है, किंतु इसकी प्रभावशीलता को और बढ़ाने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम, नियमित सांस्कृतिक गतिविधियाँ, सहयोगात्मक अधिगम तथा विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुरूप लचीली शिक्षण रणनीतियों पर विशेष बल दिया जाना आवश्यक है।

संदर्भ सूची-

1. कौर, ग., एवं चन्देल, एन. पी. एस. (2025). बहुसांस्कृतिक शिक्षण: एक समावेशी दृष्टिकोण भारतीय आधुनिक शिक्षा, 40(2), 55–61.
2. यादव, अ. (2025). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में बहुसांस्कृतिक शिक्षा भारतीय आधुनिक शिक्षा, 43(1), 56–66.
3. जोशी, ल. म. (2025). समावेशी शिक्षा के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निहित प्रावधानों का विश्लेषणात्मक अध्ययन। भारतीय आधुनिक शिक्षा, 42(4), 15–26.
4. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार